आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2015-2017

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : तेरहवां | अंक : पहला | मई-2015

4
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से
अमृतवेला

5
सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
रूहानियत
मीराबाई की बानी 16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

27
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
हरि का नाम
गुरु अर्जुनदेव जी की बानी

34
धन्य अजायब
दिल्ली व अहमदाबाद में सतसंग के कार्यक्रम की जानकारी

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। फोन- 099 50 55 66 71 (राजस्थान) 098 71 50 19 99(दिल्ली)
विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया फोन-099 28 92 53 04, 096 67 23 33 04
उप सम्पादिका : नंदिनी सहयोग : परमजीत सिंह

e-mail : dhanajaibs@gmail.com | Website : www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 मई 2015 -158- मूल्य - पाँच रुपये

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

अमृत वेला

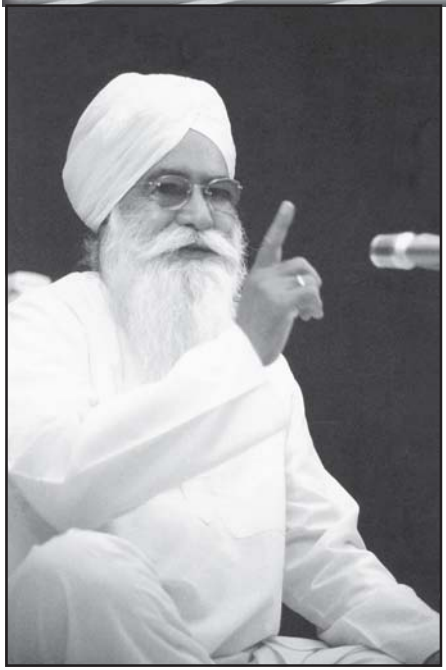

हमें पता है कि हम यहाँ क्यों इकट्ठे हुए हैं। यह अमृतवेला है इस समय पक्षी भी जागते हैं वे भी अपने पैदा करने वाले के शुक्र गुजार हैं। फरीद साहब कहते हैं:

हौं बलिहारी पंखियां जंगल जिन्हां वास।
कंकर चुगन थल वसन रब न छड्डन पास।।

हम उन पक्षियों पर बलिहार जाते हैं क्योंकि वे सुबह उठकर सबसे पहले परमात्मा का शुक्रिया करते हैं। गुरु नानकदेव जी महाराज भी कहते हैं:

चिड़ी चुकी पो फुटी वगन बहुत तरंग।
अचरज रूप संतन रचे नानक नामे रंग।।

पक्षी सुबह अपनी जुबान से उस मालिक का शुक्रिया करते हैं। जो महान आत्माएं संसार मंडल में आती हैं, वे इस समय सोने में नहीं लगी होती, नाम के साथ जुड़ी होती हैं।

हमारे ऊपर प्रभु-परमात्मा ने बड़ी भारी दया की है, उसने हमें अपना भेद दिया है नाम के साथ जोड़ा है।

***

23 जनवरी 1981

कहो नानक प्रभ एहे जनाई बिन गुरु मुक्ति न पाईऐ भाई।

हाँ भाई! हमारी आत्मा परमात्मा की अंश है, प्यार अंशा-अंशी ही होता है। हमारा असली घर सच्चखंड है वहाँ शान्ति है मौत-पैदाईश नहीं। हमने देवी-देवता देखे नहीं। हम गाय, भैंस, घोड़ियों जानवरों की बोली नहीं समझ सकते। परमात्मा जब दया-मेहर करके आत्मा को अपने साथ मिलाना चाहता है तो हम जीवों की खातिर संसार में आता है। कबीर साहब कहते हैंः

महरम होय सो जाने साधो ऐसा देश हमारा।

अगर कोई वहाँ जाता हो तो उसे ही ज्ञान होगा कि वह कैसा देश है? गुरु रविदास जी कहते हैंः

बेगमपुरा शहर का नांव दुख अंधेरा नहीं तह ठांव।

आप कहते हैं कि हम जिस शहर के रहने वाले हैं वहाँ नूर है प्रकाश है। वह नूर और प्रकाश के देश को छोड़कर हम जीवों की खातिर इंसान का तन धारण करके संसार में आता है। जिस तरह एक इंसान पढ़ा-लिखा है और दूसरा अनपढ़ है। एक इंसान जज है वह कुर्सी पर बैठा है और दूसरा इंसान मुजरिम है, जज मुजरिम को सजा सुनाता है। देखने में दोनों ही इंसान हैं लेकिन उनके ज्ञान में बहुत भारी फर्क होता है।

मौलाना रूम ने बहुत प्यार से बताया जिस तरह उर्दू भाषा में शेर और क्षीर एक ही तरह से लिखे जाते हैं लेकिन दोनों में

जमीन-आसमान का फर्क है। क्षीर दूध को कहते हैं यह ताकत देता है, शेर हिंसक जानवर है यह जीवों को फाड़कर खा जाता है।

उस शान्ति के समुद्र में अपनी आत्मा के लिए दया उठी। आप संसार में सदा ही आते रहे। आज हम जिन गुरुओं की याद में बैठे हैं उन्हें नमस्कार करते हैं, उन्होंने संसार में आकर इस गरीब आत्मा पर अपनी दया-मेहर की।

कल 6 फरवरी महाराज कृपाल का जन्मदिन था। सन्त परोपकार के लिए आते हैं वे जन्म-मरण के दुखों से ऊपर होते हैं हम लोग उस दिन को मनाते हैं। सिद्धों ने गुरु नानकदेव जी से सवाल किया कि आपका जन्म कब हुआ, कौन आपके माता-पिता हैं और आप कहाँ के रहने वाले हैं? आपने कहाः

सतगुरु के जन्में गवन मिटाया, अनहद राते ऐह मन लाया।

सतगुरु से नाम मिला उन्होंने दया-मेहर की, मेरा जन्म गुरुदेव के घर हुआ। गुरुदेव ने 'शब्द-नाम' का भेद दिया अब दिन-रात मेरी सुरत 'शब्द' का रूप हो गई है। वही असली जन्मदिन है जिस दिन हमारा मिलाप उस महान गुरु रूप परमात्मा से हो जाता है।

ऐसी हस्तियां सदा ही संसार में आती हैं लेकिन ये महान आत्माएं जिस प्यार की हकदार होती हैं दुनियादारों से उन्हें वह प्यार प्राप्त नहीं होता और न ही हम उन्हें प्यार देना जानते हैं। हम अंधे हैं वे सुजाखे हैं; अंधे को सुजाखे का क्या ज्ञान होगा?

गुरु नानकदेव जी की जन्म साखी में लेखकों ने जिक्र किया है कि उस समय के लोगों ने गुरु नानकदेव जी को कुराहिया कहा। आम लोग उन्हें अपने गांव में घुसने नहीं देते थे कि यह लोगों का दिमाग खराब करता है। कसूर के इलाके में लोगों ने गुरु नानकदेव

जी को अपने गांव में घुसने नहीं दिया। आपने एक कोढ़ी की कुटिया में जाकर रात बिताई, कोढ़ी का कोढ़ दूर हुआ।

गुरु नानकदेव जी ने दस जामें धारण किए कि लोग आपको इस जामें में नहीं तो अगले जामें में पहचान लेंगे लेकिन आप जब भी संसार में आए तो आपको किसी ने भी आराम से बैठने नहीं दिया। आपसे जो फायदा उठाना चाहिए था वह नहीं उठाया। हम आम जीवों की यही हालत होती है। जब भी महापुरुष संसार में आते हैं उस समय हम किसी और जगह आशा लगाए बैठे होते हैं और उनसे फायदा नहीं उठाते। अभी प्रेमी शब्द पढ़ रहा थाः

कहो नानक प्रभ एहे जनाई बिन गुरु मुक्ति न पाईऐ भाई।

सच्चाई को चाहे जितना मर्जी छिपा लें वह छिप नहीं सकती आखिर उजागर होती है अगर आपने संसार में कोई छोटे से छोटा कारोबार जैसे जमींदारा, लुहार का काम, बढ़ई का काम सीखना हो या किसी किस्म की शिक्षा ग्रहण करनी हो तो आपको किसी उस्ताद के पास जाकर शिक्षा ग्रहण करनी पड़ती है। जब हम दुनिया के कारोबार किसी जानकार के बिना नहीं सीख सकते तो क्या हम **रूहानियत** का उलझा हुआ मसला बिना किसी उस्ताद के हल कर सकते हैं? क्योंकि हमने अंदर जाकर प्रभु से मिलना है।

सब महात्माओं ने यही होका दिया है कि परमात्मा जंगलो, पहाड़ों और मूर्तियों के अंदर नहीं, परमात्मा आपके अंदर है। सच्चे से सच्चा मंदिर, ठाकुरद्वारा, गुरुद्वारा, मस्जिद व चर्च आपका शरीर है। हमें तो यह भी पता नहीं कि हम जो खाना खाते हैं वह गले से नीचे किस हिस्से में जाता है? जब हमें अंदर का ही ज्ञान नहीं तो हम अंदर जाकर किस तरह परमात्मा की खोज कर सकते हैं? फिर हम बाहरमुखी हो जाते हैं।

बाहर से आज तक न किसी को परमात्मा मिला है और न मिल ही सकता है। सभी महात्माओं ने यही कहा है अगर आपने परमात्मा से मिलना है तो **रूहानियत** के किसी माहिर के पास जाएं। आप उसे सन्त कह लें या उनके माता-पिता ने उनका जो नाम रखा है आप उन्हें उस नाम से बुला लें। वे यह नहीं कहते कि मैं आपका गुरु या पीर हूँ। वे कहते हैं कि अंदर जाकर सच्चाई को देखें फिर जो मर्जी आए कह लें! आप चाहे किसी भी महात्मा की बानी पढ़े सबका यही संदेश है।

मैं आपको सहजोबाई की बानी पर काफी सतसंग सुना चुका हूँ। आमतौर पर गुरु नानकदेव जी, कबीर साहब, रविदास जी, महात्मा चरनदास और भी बहुत सारे महात्मा जो परमगति को प्राप्त थे पिंड को छोड़कर ब्रह्मांड पर चढ़े जिन्होंने परमात्मा के साथ मिलाप किया अक्सर उनकी बानियों पर ही सतसंग किए जाते हैं।

जब गुरु अर्जुनदेव जी महाराज ने गुरु ग्रन्थ साहब की बीड़ तैयार की तो उन्होंने भी जाति को नहीं पहुँच को मुख्य रखा। फरीद साहब, कबीर साहब, भीखनशाह मुसलमान घराने में पैदा हुए। गुरु अर्जुनदेव जी ने अपने गुरु ग्रन्थ साहब में इन सभी को खुले दिल से जगह दी है।

महात्मा चाहे हिन्दु, मुसलमान, खत्री किसी भी जाति में हुए हों, वे किसी की पहले बनी जाति तोड़ने के लिए नहीं आते और न नई बनाने के लिए ही आते हैं। सभी महात्मा हमसे भक्ति करवाकर परमात्मा के साथ मिलाने के लिए आते हैं। वे कहते हैं कि आप अपनी-अपनी कौम में रहें, अपने-अपने बोले बोलें। अपने रीति-रिवाज के मुताबिक शादियाँ करें। मसला यह है कि गृहस्थ की जिम्मेवारियां पूरी करते हुए अपना भी कुछ बनाएं।

अपना कौन है भाई? जब मौत आती है तो हम इन आँखों से देखते हैं कि माता-पिता, बहन-भाई, यार-दोस्त और कोई हुकूमत हमारा साथ नहीं देती, उस समय कोई मदद नहीं करता। घर के लोगों को यह भी पता नहीं होता कि मौत का फरिश्ता आया कहाँ से और कान से पकड़कर ले कहाँ गया? वे रोने-चिल्लाने के सिवाय हमारी क्या मदद करेंगे! कबीर साहब कहते हैंः

आसी पासी योद्धा खड़े सभी बजावें गाल।
मंज महल्लो लै गया ऐसा काल कराल।।

मुझे अपनी जिंदगी में झोपड़ी वाले से लेकर राजाओं तक से मिलने का मौका मिला है। मैंने आर्मी में दो राजाओं की नौकरी भी की है। आखिरी समय में मैंने वे नजारे देखे जब बहुत सख्त इंतजाम किए गए पहरे लगाए गए लेकिन किसी पहरे वाले को पता नहीं लगा कि मौत का फरिश्ता राजा को कहाँ ले गया, जिन्हें ये नहीं पता वे क्या मदद करेंगे? गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

सज्जन से ही आखिए जो चलदयां नाल चल्लन।
जित्थे लेखा मंगिए तित्थे खड़े दस्सन।।

सबसे मुश्किल घड़ी मौत की है। सज्जन वही है जो मौत के समय साथ दे। मैंने सहजो बाई के सतसंग में बताया था कि उस समय घर के लोग इतनी हमदर्दी करते हैं वे कहते हैं कि मरना बाद में अगर कहीं कुछ रखा हुआ है तो उसके बारे में बता दे। उसकी जान पर बनी होती है और हम कहते हैं कि इस कागज पर दस्तखत कर दे। सब लोग अपनी गर्ज से हमारे साथ लगे हुए हैं। बेगर्ज प्यार है तो उस महात्मा का है जिसने हमें 'नाम' दिया है।

आज आपके आगे मीरा बाई की बानी रखी जा रही है, यह गौर से सुनने वाली है। मीरा बाई राजपूताना के मेड़ता परिवार में

पैदा हुई। मीरा बाई राजा रतनसिंह की पुत्री और राव दूदा की पौत्री थी। रतनसिंह राव दूदा का छोटा पुत्र था। छोटा पुत्र गद्दी का हकदार नहीं होता उसे गुजारे के लिए गांव या भत्ता इत्यादि ही मिलता है। जब मीरा बाई दो साल की थी उसकी माता उसे बिछोड़ा दे गई। राव दूदा का मीरा बाई के साथ बहुत प्यार था, उसे पौत्री जान से भी प्यारी थी। राव दूदा मीरा बाई को राजमहल में ले आया। मीरा बाई का पालन-पोषण राजमहल में हुआ। राव दूदा योद्धा के साथ एक धर्मी आदमी भी था। उसके दिल में परमात्मा के लिए जगह थी इसलिए उसके राजमहल में पंडित, सन्यासी और साधु लोग आते-जाते थे। मीरा को उस संगत का मौका मिला।

उस वक्त के राजाओं के रस्मो-रिवाज के मुताबिक मीरा बाई को हर किस्म की शास्त्र विद्या, शस्त्र विद्या, तीरंदाजी, घुड़सवारी सिखाई गई। शस्त्र विद्या ने मीरा बाई के अंदर निडरता और दिलेरी पैदा की। वेद-पुराणों की शिक्षा ने मीरा बाई के अंदर भक्तिभाव पैदा किया। मीरा बाई सदा बड़ी कोमल चित्त और मन मोहनी आवाज में बोलती थी।

जहाँ मीरा में इतने गुण थे वहाँ यह रूपवंती भी थी। परमात्मा ने इसे बहुत रूप दिया था। मेड़ता के राजा सांगा ने मीरा की हर प्रकार की योग्यता सुनी कि यह शास्त्र विद्या में निपुण है अच्छी पढ़ी-लिखी दिलेर है और रूप भी कमाल का है। क्यों न मैं अपने प्यारे युवराज के लिए मीरा का रिश्ता लूं! ताकि आने वाले समय में यह मेरे इलाके की महारानी बन जाए। राणा सांगा ने रिश्ता मांगा, राव दूदा ने अपनी पौत्री का रिश्ता खुशी-खुशी दे दिया।

जब इन राजघरानों का आपस में संबंध हुआ उस समय राजस्थान में ये दोनों शक्तिशाली स्वतंत्र राज्य थे। राव दूदा ज्यादा

समय संसार में नहीं रहा जिससे मीरा को गहरा सदमा हुआ। उस समय मीरा का चाचा वीरमसिंह गद्दी पर बैठा। चाचा वीरमसिंह ने मीरा बाई की शादी बहुत धूमधाम से की। मेवाड़ और मेड़ता को एक दुल्हन की तरह सजाया गया। हिन्दुस्तान के रीति-रिवाज के मुताबिक बहुत दान-दहेज दिया गया। मीरा का ससुर राणा सांगा अपने बड़े लड़के भोजराज के साथ मीरा को ब्याह कर ले गया। उसके दिल में चाव था कि मीरा ने आने वाले समय में हमारे राज्य की महारानी बनना है।

मीरा का चाचा वीरमसिंह अपनी भतीजी के साथ अटूट प्यार करता था उसके दिल में मीरा के लिए बहुत इज्जत थी। उसने मीरा को बहुत दान-दहेज दिया और खुशियां मनाई। राणा सांगा ने भी अपनी बहु के नाम काफी सारी जागीर करवाई। इतिहास में आता है मीरा को जो भी जमीन मिलती वह गरीब लोगों में बाँट देती थी।

मीरा का ससुराल और मायके में बहुत इज्जत-मान था। मीरा के पति के दिल में मीरा के लिए अथाह प्यार था लेकिन मीरा का शादी-शुदा जीवन ज्यादा समय निभ नहीं सका, उसका पति संसार छोड़ गया। मीरा के दिल पर बहुत बोझ आया, उदासी आई कि यह संसार तो चलनहार है।

मैंने पहले ही बताया है कि यह दुनिया मौत-पैदाईश की है, देने-लेने का संबध है। जिंदगी में कई घटनाएं ऐसी हो जाती हैं जो हिलाकर रख देती हैं। अच्छी आत्माओं के अंदर भक्ति का सोया हुआ बीज जाग जाता है, मीरा के साथ भी ऐसी ही घटना हुई।

शुरू में मीरा बाई कृष्ण भगवान की उपासक थी। मीरा कृष्ण की इतनी उपासक थी कि कृष्ण का ही रूप हो चुकी थी। हमारे सतगुरु महाराज कृपाल सदा ही कहते आए, ''भूखे को रोटी

प्यासे को पानी कुदरत का उसूल है जरूर मिलती है।'' जहाँ से परम सन्त आते हैं अवतारों की वहाँ तक पहुँच नहीं होती। अवतार ब्रह्म में से आते हैं, ये खुद आने-जाने और मौत-पैदाईश में लगे हुए हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

कृष्ण सदा अवतारी रुदो कित लग तरे संसारा।

जो खुद मौत-पैदाईश की दुनिया में है वह दूसरे को किस तरह पार ले जा सकता है? मैं महाराज सावन सिंह जी की मिसाल दिया करता हूँ आप कहा करते थे, ''सुख-दुख, गरीबी-अमीरी, बीमारी-तंदरूस्ती, गुरु का मिलाप, नाम का मिलना फिर गुरु पर ऐतबार आएगा या नहीं यह सारा कुछ पहले से ही तय होता है। वक्त आने पर घटना घट जाती है, जीव लाचार है इसे पता नहीं होता।'' मीरा की जिंदगी में भी ऐसी घटना घटी।

उस वक्त आत्मा को सच्चखंड ले जाने की जिम्मेवारी गुरु रविदास जी को सौंपी गई थी। आप घट-घट की जानने वाले थे। आप खुद चितौड़ में चलकर गए। उस वक्त राजाओं के राज्य में बहुत छुआछात थी।

पंजाब की रियासतों में गरीब-गुरबों की बस्ती गांव से बाहर बनाई जाती थी। हम आज भी देखते हैं इनकी बहुत सारी आबादी होने की वजह से इनके आंगन साथ मिले हुए हैं लेकिन पहले इन लोगों को गांव के त्रिकोण में थोड़ी दूर करके बसाया जाता था कि इन्हें न पूर्व की हवा आए न पश्चिम की हवा आए।

जिस कौम को हमारी तरफ से इतनी निरादरी मिलती हो अगर परमात्मा रूप सन्त उस जाति में आ जाएं और एक राजपूत महारानी उन्हें अपना गुरु माने, यह मीरा बाई के लिए तो मुश्किल नहीं था। मीरा बाई कहती हैंः

धुर की कलम भिड़ी

मेरी धुर की कलम भिड़ गई है लेकिन हम सामाजिक लोगों को ऐसी चीज़ें अच्छी नहीं लगती। उस समय मीरा का देवर गद्दी पर था। लोगों ने उसे सिखाया कि मीरा एक चमार जाति के रविदास के पास जाती है, उसे अपना गुरु मानती है। सामाजिक लोगों ने राजा के मन में मीरा के लिए यहाँ तक घृणा पैदा कर दी कि मीरा को माथे का कलंक समझा जाने लगा। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

भक्तां ते संसारियां जोड़ कदे न आया।

यह कोई नई बात नहीं मालिक के प्यारों के साथ सदा से ही ऐसा होता आया है लेकिन वे बड़े पक्के विश्वास के साथ इस तरफ लगते हैं। पल्टू साहब कहते हैं:

भक्त जगत से वैर है चारो युग प्रमाण।

चाहे कोई निन्दा करे या बड़ाई करे भक्तों के ऊपर इसका कोई असर नहीं होता, उन्हें कोई रोक नहीं सकता। मीरा के ऊपर कई किस्म के पहरे लगाए गए। मीरा की ननद को सिखाया गया। ननद मीरा को बहुत समझाती थी लेकिन मीरा के भक्तिभाव का उसके ऊपर भी असर हुआ वह भी मीरा के गुण गाने लगी।

रविदास जी जब भी काशी से चितौड़ आते मीरा उनकी संगत से फायदा उठाती। मीरा को महल में कैद भी कर दिया गया। मीरा अपनी चुन्नियों को बांधकर उनसे लटककर नीचे आ जाती लेकिन अपने गुरु का सतसंग नहीं छोड़ती थी। मीरा की सोई हुई आत्मा जाग गई थी। मीरा अपनी बानी में लिखती है कि जब पहले बीज छोटा था तो मुझे किसी ने नहीं रोका अब यह पेड़ बड़ा बन गया है तो सब मुझे रोक रहे हैं। अब मैं कैसे रह सकती हूँ? मेरे तो जान प्राण गुरु ही हैं। वह अपने गुरुदेव से पूरा फायदा उठाती रही।

अमेरिकन बीबीयाँ हमारे प्रतिनिधि रसल प्रकिन्स के आगे कई साल से विनतियां कर रही थी कि बाबा जी से कहें कि वह सहजो बाई या मीरा बाई की बानी पर सतसंग कर दें। हमें समझ आए कि सन्तमत में जितनी तरक्की एक मर्द कर सकता है उतनी ही तरक्की एक औरत भी कर सकती है। सन्तमत में औरत को शुरू से ही आदर-सतकार मिलता आया है। गुरु नानकदेव जी ने तो यहाँ तक लिखा हैः

सो क्यों मंदा आखिए जित जम्मे राजान।

जहाँ से हमारी पैदाईश है उसे पैर की जूती समझने से बड़ा गुनाह और क्या हो सकता है? सन्त मियां-बीवी को इकट्ठे ही नाम देते हैं कोई भिन्न-भेद नहीं समझते क्योंकि औरत-मर्द सबके अंदर वही आत्मा है। जब तक हम आँखों से बाहर बैठे हैं हमें तब तक ही हिन्दु, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, चूड़े-चमार नजर आते हैं।

जब हम सन्तों की बताई हुई युक्ति के मुताबिक फैले हुए ख्याल को आँखो के पीछे लाकर नौं द्वारे खाली कर लेते हैं अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीनों पर्दे उतार लेते हैं, पारब्रह्म में पहुँच जाते हैं। आत्मा वहाँ अपने प्रकाश में जाहिर होती है वहाँ जाकर ज्ञान होता है कि मैं उसी तत्त्व की हूँ जिस तत्त्व का परमात्मा है। वहाँ पहुँची हुई आत्मा सारे संसार को अपना समाज समझती है, अपना घर समझती है। ऐसी आत्मा का हर कौम, ऊँच-नीच के साथ प्यार होता है।

उस समय के राजा किसी गरीब से बात करते हुए बीच में बिचोलिया रखते थे। गरीब से सीधी बात नहीं करते थे कि कहीं मैं दूषित न हो जाऊँ? राजस्थान के कवि चरनदास ने राजा-महाराजाओं की खूब कहानियां गाई लेकिन मीरा का कहीं जिक्र नहीं किया

क्योंकि मीरा बाई को राजघराने में आदर-सत्कार नहीं था। मीरा बाई को संसार में आए हुए साढ़े चार सौ साल हो गए हैं लेकिन कोई उसकी याद को भुला नहीं सका। लोग उस वक्त के राजाओं को याद नहीं करते लेकिन मीरा को अपने दिल में जगह देते हैं। आज भी लोग प्यार से मीरा के भजन गाते हैं। आपके आगे मीरा बाई की बानी रखी जा रही है गौर से सुनें:

मीरा मन मानी सुरत सैल असमानी।

मैंने कल भी सतसंग में बताया था जिस तरह हम बच्चे को खिलौना दे देते हैं तो वह हर तरफ से अपने ख्याल को हटाकर अपनी तवज्जो उस खिलौने पर लगा देता है अगर हम बच्चे से वह खिलौना ले लें तो वह रोना-चिल्लाना शुरू कर देता है। मीरा बाई कहती है, ''भक्ति का खिलौना मुझे मेरे गुरुदेव से मिला है। यह राम-नाम का खिलौना मीठे शब्द, मीठी धुन के रूप में सच्चखंड से उठकर मेरे माथे में आ रहा है, मैं इसे छोड़ नहीं सकती।''

जब हम मन माया के मंडल को पार करके सुन्नमंडल में पहुँच जाते हैं वहाँ यह राम-नाम का खिलौना है। सन्त इसे अगम-अगोचर कहकर भी बयान करते हैं। वहाँ पहुँची हुई आत्मा इसे छोड़ने को तैयार नहीं होती।

हमें गुरु अर्जुनदेव जी का इतिहास पढ़ने से पता लगता है कि उन्हें किस तरह के कष्ट दिए गए। उनका प्यारा एक मुसलमान फकीर उनके पास गया, उसने आपको गर्म तवे पर बैठे हुए देखा कि आपके सिर में गर्म रेत पड़ रही थी तो उसने कहा, '' गुरुदेव! आप मुझे हुक्म दें मैं लाहौर की ईंट से ईंट बजा देता हूँ।'' आपने हँसकर कहा, ''मियां मीर! यह तो मैं भी कर सकता हूँ पर करामात दिखाना कहर है।''

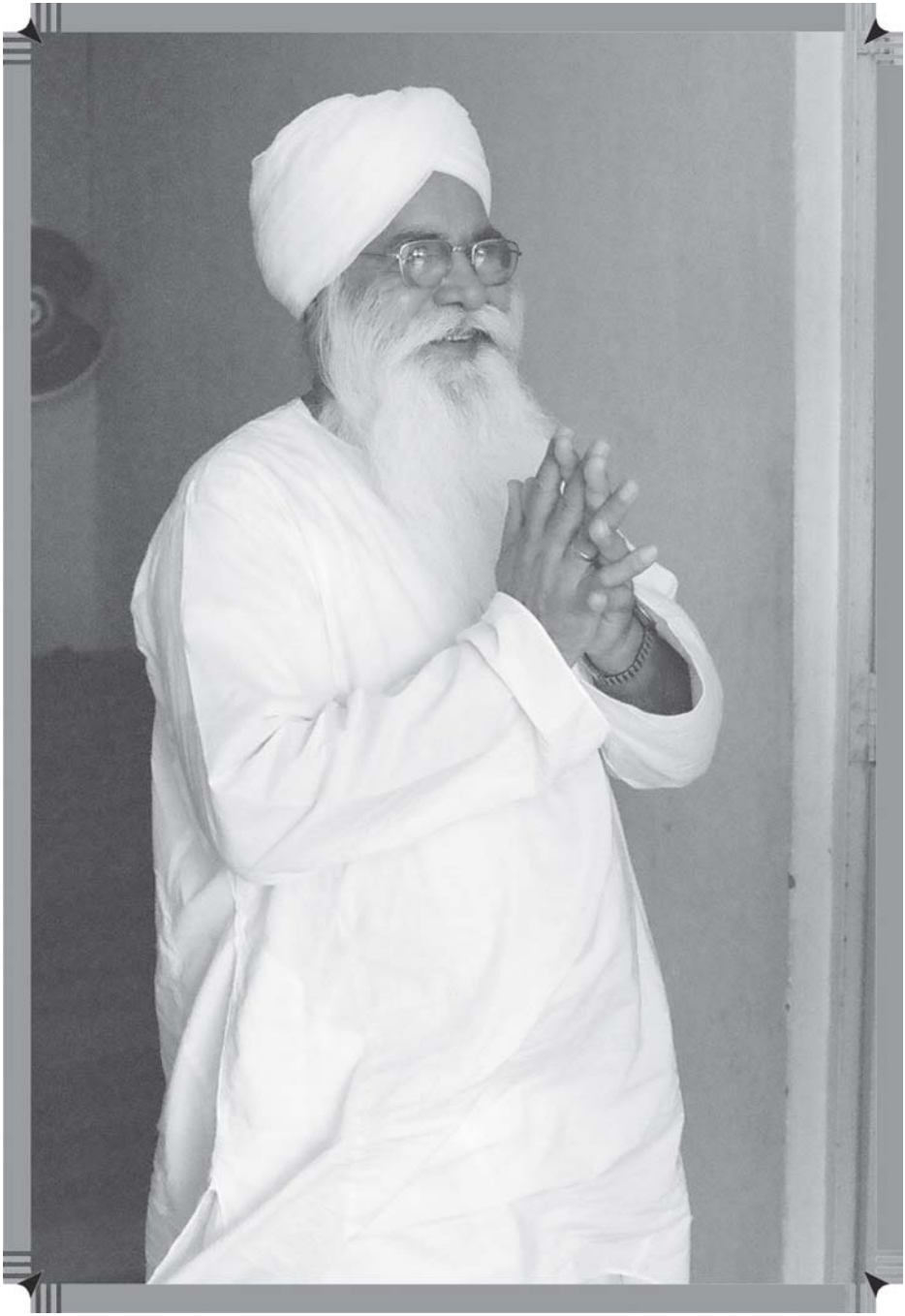

प्यारा बेटा अपने पिता की खिलाफत नहीं करता बल्कि पिता का आज्ञाकार होता है। सन्त परमात्मा के शरीक नहीं परमात्मा के आज्ञाकारी बच्चे बनते हैं। सन्त परमात्मा के साथ इस तरह जुड़े होते हैं जैसे फूल और खुश्बू अलग-अलग नहीं होते। खांड के बिना पतासा नहीं बनता, पतासे के बिना खांड नहीं बनती अगर पतासे को पानी में घोलकर कहें कि पतासे का रूप दिखाओ तो क्या दिखाया जाएगा? सन्तों का परमात्मा के साथ ऐसा ही अटूट रिश्ता होता है। कबीर साहब कहते हैं:

राम सन्त में भेद कुछ नाहीं।

आप कहते हैं राम और सन्त में कोई भेद नहीं। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

हम सन्तन की रैण प्यारे, हम सन्तन की शरणा।
सन्त हमारी ओट सताणी, सन्त हमारा गहना।
सन्तन स्यों हम लेवा देवी, सन्तन स्यों व्यवहारा।
सन्तन मौको पूंजी सौंपी, तो उतरया मन का धोखा।
धर्मराय अब क्या करेगा, जो फाटयो सगला लेखा।।

सन्त नाम देते समय ब्रह्म में हमारा जन्म-जन्मांतरो का जो स्टॉक है उसे अपनी दया-दृष्टि से काट देते हैं और कहते हैं, ''देख प्यारेया! तूने पहले जो कर लिया सो कर लिया अब यहीं रूक जा और अपनी जिंदगी को पवित्र बना। भजन-सिमरन करके अपनी जिंदगी को मालिक के लेखे लगा।''

पिछले अवगुण बक्श ले, प्रभ अग्गे मार्ग पावे।

अगर कोई कैदी कैद भुगतकर मजिस्ट्रेट से कहे कि मेरा चूल्हा चौंका किसी को न देना मैं फिर आने वाला हूँ तो इसमें मजिस्ट्रेट का क्या कसूर है? कबीर साहब कहते हैः

गुरु बेचारा क्या करे जे सिक्खन में चूक।
अंधे एक न लग्गी ज्यों बाँस बजाई फूँक।।

अगर हम नाम लेकर फिर बुरे कर्मों में लग जाएं तो सन्तों का क्या कसूर है? उन्होंने हमें मुफ्त में उस रास्ते पर डाला जिस रास्ते के लिए ऋषि-मुनि भी तरसते थे। ऋषि-मुनि जप-तप करके हार गए लेकिन उन्हें यह राम-नाम का खिलौना नहीं मिला क्योंकि उनके पास अंदर जाने का कोई तरीका नहीं था। उन्हें कोई पूरा गुरु नहीं मिला जो उन्हें अंदर ले जाता।

मीरा बाई कहती हैं, ''अब मेरा मन मान गया है। आत्मा शरीर का हिस्सा नहीं रही, जब चाहे सच्चखंड में उड़ जाती है। यह शरीर बूढ़ा हो जाता है इसकी दीवारें कायम नहीं रहती हिलने लग जाती हैं, हाथ-पैर काँपने लग जाते हैं। यह चेतावनी है कि अब हम भजन करें लेकिन हमारा मन फिर भी नहीं मानता।''

जिंदगी का दीपक बुझने लगता है, रात अंधेरी होने लगती है। यम अंदर डेरा लगा रहे होते हैं लेकिन यह जीव हाथ में कटोरी लेकर दर ब दर तेल मांगता फिरता है कि किसी न किसी तरह यह दीपक फिर जल जाए! हम कभी किसी डाक्टर के पास जाते हैं तो कभी किसी डाक्टर के पास जाते हैं। प्यारेयो! यह तेल मांगना ही है। अब क्या बनता है? यम अंदर घर कर लेते हैं इस किले पर कब्जा कर लेते हैं। फरीद साहब कहते हैं:

दो दीवे बलेंदया, मलिक बैठा आए।
गढ़ लीता घट लुटया, दीवड़े गया बुझाए।।

वह इन आँखों के देखते-देखते ही आकर बैठ जाता है। इस शरीर को किला या गढ़ कह लें इन आँखों की रोशनी बुझा जाता है। उस समय कई लोग शीशा दिखाते हैं कि कुछ दिखता है? कई

लोग दीपक जलाते हैं कि क्या ज्योत दिखाई देती है? सन्त कहते हैं कि यह सब तो आपको पहले करना था। अंदर की ज्योत जीते जी देखनी थी यह राम-नाम की ज्योत औरत-मर्द सबके अंदर है। पल्टू साहब कहते हैं:

भजन तेल की धार साधना ऐसी साधी।

ऐसे महात्मा आँखें बंद करते हैं तो मालिक के पास हैं। आँखें खोलते हैं तो दुनिया में हैं। उनकी वृति संसार के झकझोलों में नहीं डोलती। जैसे पानी की धार टूटती है तेल की धार नहीं टूटती। मीरा बाई प्यार से कहती हैं, ''अब कोई निन्दा करे, कोई अच्छा-बुरा कुछ भी कहे मैंने तो जिसकी बनना था बन चुकी हूँ।''

जब जब सुरत लगे वा घर की, पल पल नैनन पानी।।

अब मीरा बाई विरह से भरे हुए लोगों की हालत बताती हैं कि जब उस तरफ ख्याल जाता है सुरत चढ़ती है गुरु की याद आती है तब पल-पल आँखों से पानी बहने लगता है। गुरु शिष्य की खोज करता है, गुरु शिष्य में विरह पैदा करता है। जिसने विरह लगाई है उसे ज्ञान होता है।

कल भी सतसंग में महाराज कृपाल की जिंदगी का वाक्या सुनाया था। आप लाहौर में नौकरी के दौरान दफ्तर में काम करते थे। जब आपको अपने पूर्ण गुरुदेव महाराज सावन की याद आती तो आपकी आँखों से पानी बहने लगता, फाइलें भीग जाती थी। आँखे बंद होती थी लेकिन कलम चलती रहती थी। आपका पूर्ण गुरुदेव भी बेफिक्र नहीं था जिसने तीर चलाया है उसे पता है। लाहौर से डेरा ब्यास का काफी फासला है। महाराज सावन कहते, लाहौर चलना है। जिसने विरह लगाई होती है वह भी जानता है।

मीरा बाई कहती है, ''जिसे भी परमात्मा के साथ मिलाप करने का मौका मिला उसके अंदर विरह पैदा होती है उसकी आँखों से पानी बहने लगता है; वह रोकने से नहीं रूकता।''

राबिया बसरी मुसलमानों में एक फकीर हुई है। किसी ने उससे पूछा कि तू परमात्मा की याद में कब बैठती है तुझे कैसे पता लगता है कि अब परमात्मा आने वाला है? राबिया बसरी ने कहा, ''मेरे दिल में तड़प उठती हैं आँखों से अपने आप ही पानी आना शुरू हो जाता है। तब मैं समझती हूँ कि अब उसके आने का वक्त हो गया है मैं उसके 'नाम' में जुड़ जाती हूँ।''

यही हालत मीरा बाई बयान करती हैं , ''जिनकी ऐसी हालत होती है उनकी आँखों से पल-पल पानी गिरता है। वे दुनिया या दुनिया की धन-दौलत के लिए नहीं रोते। वे तो अपने प्यारे प्रीतम को अंदर प्रकट करने के लिए रोते हैं।'' कबीर साहब कहते हैं:

सुखिया सब संसार है खाए और सोए।
दुखिया दास कबीर है जागे और रोए।।

ज्यों हिये पीर तीर सम सालत, कसक कसक कसकानी।।

उस समय ऐसी हालत होती है जैसे दिल में तीर लग जाए और वह तीर निकलता न हो अगर उस तीर को हिलाएं तो वह अंदर ही जाए। सिर्फ मीराबाई ही यह नहीं कहती आप और भी महात्माओं की बानी पढ़कर देख सकते हैं!

गुरु रामदास जी महाराज अपनी विरह की पीड़ा बयान करते हुए कहते हैं, ''हमारे दिल में उस परमात्मा की खोज पैदा हुई। हमने परमात्मा को जंगलों, पहाड़ों और पवित्र नदियों में स्नान करके हर जगह ढूंढा लेकिन वह प्यारा कहीं नहीं मिला।'' जब हम

गुरु अमरदेव जी की शरण में आए तो उन्होंने कहा प्यारेया! तू जिसे मिलना चाहता है वह तो तेरे अंदर है। उनका यह वचन मुझे तीर की तरह लगा कि मैंने इतने जन्म पाए लेकिन वह प्यारा मेरे अंदर है और मैं उसे बाहर खोज रहा हूँ। गुरु तेग बहादुर जी महाराज कहते हैं:

काहे रे वन खोजन जाई।
सर्वनिवासी सदा अलेपा तोही संग समाई।
पोहप मद्य ज्यों वास वसत है मुक्कर में जैसे स्याही।
तैसे ही हर वसे निंरतर घट ही खोजो भाई।
बाहर भीतर ऐको जाने ऐह गुरु ज्ञान बताई।।

गुरु साहब कहते हैं क्यों जंगलो-पहाड़ों में टक्करे मारते फिर रहे हो? जैसे साबुन के बिना कपड़ा साफ नहीं होता, घोड़े के बिना सवारी नहीं। माता-पिता के बिना बच्चा पैदा नहीं होता। साधु के बिना दरबार नहीं; सन्तों के बिना हमें नाम का भेद नहीं मिलता।

मीरा बाई यही कहती हैं, ''परमात्मा के दरवाजे पर कोई पहरेदार है तो वह सन्त हैं। परमात्मा ने अपने दरवाजे की चाबी अपने प्यारे बच्चे सन्तों को दी है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

जिसका गृह तिस दीया ताला, कुंजी गुरु सौंपाई।
अनिक उपाय करे नहीं पावे, बिन सतगुरु शरणाई।
जिनके बंधन काटे सतगुरु तिन साध संगत लिव लाई।।

जिस परमात्मा ने यह शरीर बनाया है उसी ने ताला लगाया है और चाबी महात्मा के हवाले की है। वह जिसे तारना चाहता है सबसे पहले उसे साध-संगत में लाता है। सतसंग सुनकर हमारे भूले मन को होश आती है कि हमारा घर कहाँ है और हम कहाँ जा रहे हैं? गुरु रामदास जी महाराज कहते हैं:

अंतर प्यास उठी प्रभ केरी, सुण गुरु वचन मन तीर लगईया।
हौं आकल विकल भई गुरु देखे, हौं लोट पोट होई पईया।।

गुरु का वचन मेरे अंदर तीर की तरह लगा। जब मैंने गुरु के कहे मुताबिक नौं द्वारे खाली करके सूरज, चंद्रमा, सितारे पार करके गुरु को अंदर प्रकट किया बेशक! मैं बाहर कितना भी पढ़ा लिखा था वह सब भूल गया। जब अंदर जाकर देखा कि वह मालिक जो बाहर पांच कपड़ो का तन धारण करके बैठा है वह अंदर भी है।

रात दिवस मोहिं नींद न आवत, भावे अन्न न पानी।।

परमात्मा के आशिक पेट भरकर खाना नहीं खाते, उन्हें रात को नींद नहीं आती और दिन में उस मन मोहनी सूरत को आँखों के आगे रखकर हैरान फिरते हैं। गुरु अर्जुनदेव जी नींद से कहते हैं, ''तू घट जा। रात से कहते हैं तू बढ़ जा ताकि मेरा उस प्यारे से मिलाप बना रह जाए।''

ऐसी पीर बिरह तन भीतर, जागत रैन बिहानी।।

महात्मा कहते हैं कि रात को चोर और भोगी जागते हैं। कर्मों का बोझ तो पहले ही सिर पर है वे और बोझ बांध लेते हैं या मालिक के प्यारे जागते हैं वे सारी रात परमात्मा के साथ जुड़े रहते हैं नींद तो सिर्फ जिस्म को हल्का करने के लिए ही देते हैं। जिस्म को हल्का करने के लिए तीन-चार घंटे की नींद ही काफी होती है। भूख और नींद को जितना मर्जी बढ़ा लें जितना मर्जी घटा लें।

महाराज कृपाल सदा कहा करते थे, ''आप रातों को जंगल बना लें। जिनकी रातें बन गई उनका सब कुछ ही बन गया।'' फरीद साहब कहते हैं:

पहले पहरे फुलड़ा फल की पीछे रात।
जो जागणंगे सो लेंणगे साईं कन्नियों दात।।

जो जागेंगे वे पाएंगे। एक प्रेमी ने महाराज सावन के चरणों में माथा टेक दिया। सन्त इस चीज़ को पसंद नहीं करते कि लोग उनके पैरों में माथा टेकें। आपने उस प्रेमी को डाँटा। एक प्रेमी ने कहा कि हम जीवों के पास यही कुछ है आप दया करें। आपने कहा कि **मैं तीन बजे हर सतसंगी के पास दया की टोकरी लेकर जाता हूँ लेकिन सब सोए होते हैं किसे दया दूं**! फरीद साहब कहते हैंः

रात कस्तूरी वंडया, सुत्तया मिले न भाव।
जिन्हां नैन निंद्रावले, तिन्हां मिलण क्वाओ।।

रात को मालिक अपने प्यारों को नाम की कस्तूरी बाँटता है। जो खाकर सोए हुए हैं उन्हें क्या मिलेगा?

ऐसा वैद मिलै कोई भेदी, देस बिदेस पिछानी।।

मालिक के प्यारों ने खोजने में कोई कसर नहीं छोड़ी होती। किसी भी महात्मा की जिंदगी पढ़कर देखें उन्होंने काफी खोज की होती है। महाराज सावन सिंह जी अपने बारे में बताया करते थे कि मैंने बाईस साल गुरु की खोज की। मैं अपने बारे में बताया करता हूँ कि मैंने बिना किसी भेदभाव के शिवद्वाले, मंदिर, मस्जिद, चर्च में जाकर माथे टेके। मेरे दिल में सबके लिए इज्जत और प्यार था।

उस समय पंजाब के लोग जलधारे करते और धुणे तपाते थे। मैंने यह रीति-रिवाज भी बहुत प्यार से किया। मैंने ये धूणे उस समय तपाए जब हम कश्मीर की लड़ाई से वापिस आए थे। सरकार ने हमें एक साल शिमला की पहाड़ी में छुट्टियां मनाने के लिए दिया था। धूणा जून के महीने में चालीस दिन तक तपाया जाता है। प्यारेयो! प्यार-प्यार ही होता है, तड़प-तड़प ही होती है।

मुझे बाबा बिशनदास जी से 'दो-शब्द' का भेद मिला। जब मैं धूनिया तपाकर बाबा बिशनदास जी के पास गया तो आपने कहा,

''भले आदमी! आग तो अंदर पहले ही बहुत जल रही है। काम की आग इंसान को बेसुरत कर देती है इंसान रिश्ता ही भूल जाता है, कामी आदमी बेशर्म हो जाता है। क्रोध और लोभ की आग है। पांच आग तो अंदर जल रही हैं, छठी ऊपर सूरज की है बाहर सातवीं आग और जलाकर बैठ गया है तो क्या हुआ!''

जब गुरु नानकदेव जी के साथ ऐसी ही विरह थी तब आपके माता-पिता ने वैद्य को और झाड़ा करने वाले को बुलाया कि इसे किसी भूत-प्रेत की छाया है। आप अपनी बानी में लिखते हैंः

वैद्य बुलाया वेदगी, पकड़ ढिंढोले बाँह।
भोला वैद्य न जाणें, कर्क कलेजे माँह।।

वैद्य तो नाड़ी देखता है। यह दर्द तो दिल के अंदर लगा हुआ है। वैद्य को इस दर्द का क्या पता है। दर्द कलेजे में है और वैद्य आँखों में दवाई डालता है। लोग मुझे देखकर कहते हैंः

कोई आखे भूतना कोई कहे बेताला।
कोई आखे आदमी नानक बेचारा।।

कोई कहता है इस पर भूत-प्रेत की छाया है। कोई कहता है कालू के बेटे नानक का कोई ईलाज नहीं करवाता तभी यह दोपहर को घूमता फिरता है। प्यारेयो! वे अंदर से सचेत होते हैं अपने घर की खोज में होते हैं। वे ऐसे आदमी की खोज में होते हैं जो परमात्मा की याद में जाग उठा होता है। मीरा बाई भी अपनी जिंदगी का हाल बताती हैं कि मैं हर जगह ढूंढ़ती फिरती हूँ कि कोई मेरी बीमारी का वैद्य मिल जाए!

तासों पीर कहूं तन केरी, फिर नहिं भरमों खानी।।

मीरा बाई कहती हैं, ''मैं अपना दर्द उसे बताऊँगी जिसे यह दर्द लगा होगा फिर मैं जन्म-मरण के दुखों में नहीं आऊँगी।''

खोजत फिरों भेद वा घर को, कोई न करत बखानी।।

मीरा बाई कहती हैं, ''मैं दिन-रात खोजती फिरती हूँ पंडितो, मौलानों, भाईयों से पूछती हूँ कोई भी हामी नहीं भरता कि मैं अंदर जाता हूँ तुझे ले जाऊँगा।''

रैदास संत मिले मोहिं सतगुरु, दीनी सुरत सहदानी।।

जब बच्चा हर तरफ से ख्याल को हटाकर माता के लिए रोता है तो उसकी माता से भी रहा नहीं जाता। माता सारे काम छोड़कर बच्चे की जरूरत को पूरा करती है। आत्मा परमात्मा की अंश है, परमात्मा की बच्ची है। जब यह बच्ची जगह-जगह उसकी तड़प में फिरती है तो उससे भी रहा नहीं जाता। परमात्मा ने गुरु रविदास जी के साथ मिलाप करवा दिया। गुरु ने दया-मेहर करके उसे घर का पता बताया। जो कमाई करते हैं उन्हें पता है कि गुरु हर मंजिल पर हमारी मदद करता है।

मैं मिली जाय पाय पिया अपना, तब मोरी पीर बुझानी।।

मीरा बाई कहती हैं, ''मेरे अंदर दिन-रात पीड़ा थी, पीड़ा की वजह से मैं सोती नहीं थी। मैं अपने प्रभु परमात्मा से मिल गई हूँ, अब मेरे दिल में विछोड़े का दर्द नहीं है।''

मीरा खाक खलक सिर डारी, मैं अपना घर जानी।।

मीरा बाई कहती हैं, ''मुझे किसी की बड़ाई की, निन्दा की परवाह नहीं; मैं तो अपने घर जहाँ से आई थी वहीं मिल गई हूँ।''

***

DVD No -217

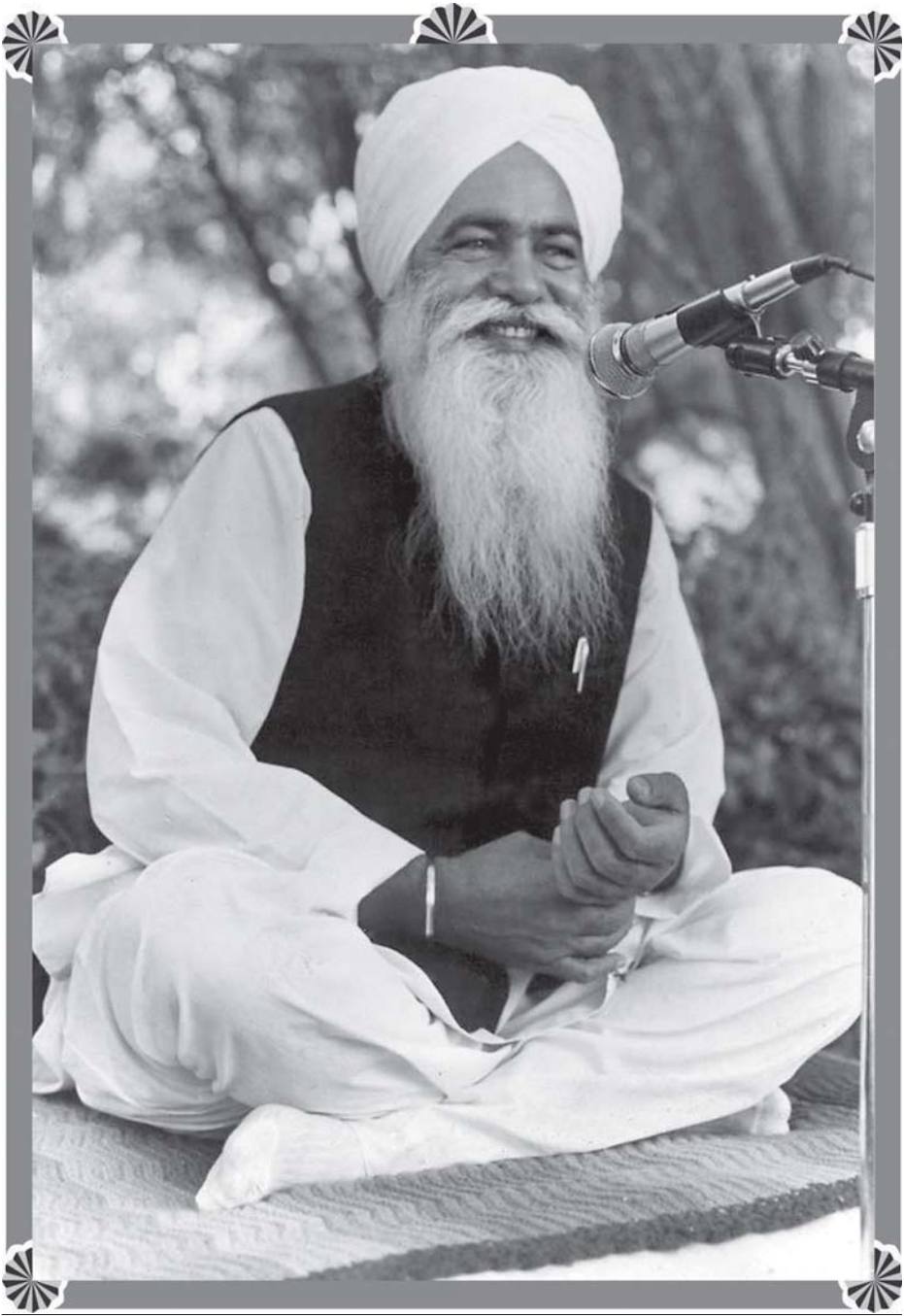

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

हरि का नाम

(गुरु अर्जुनदेव जी की बानी)

हरि का नामु जन कउ भोग जोग।।
हरि नामु जपत कछु नाहि बिओगु।।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज प्यार से कहते हैं, ''जिस तरह दुनिया भोगों में फँसी हुई है और भोगों से ऊपर कुछ नहीं समझती उसी तरह सन्तों का भोग या जोग 'नाम' के साथ जुड़ना है। सन्त हमेशा नाम के साथ जुड़े रहते हैं।''

जनु राता हरि नाम की सेवा।।
नानक पूजै हरि हरि देवा।।

अब गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''जो महात्मा उठते-बैठते, चलते-फिरते, सोते-जागते नाम में जुड़ गए हैं, नाम और वह एक हो गए हैं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश और तैंतीस करोड़ देवता उस महात्मा की पूजा में लगे हुए हैं, उसकी बड़ाई कर रहे हैं और झुक-झुककर उस महात्मा को सलाम कर रहे हैं।''

जगत पास से लेते दान गोविंद भक्त को करे सलाम।।

हरि हरि जन कै मालु खजीना।।
हरि धनु जन कउ आपि प्रभि दीना।।

सन्तों के पास अगर कोई सच्चा खज़ाना है तो वह नाम है। परमात्मा ने खुद दया-मेहर करके उन्हें नाम का खज़ाना दिया हुआ है। वह खज़ाना कभी खत्म नहीं हो सकता चाहे वे दुनिया में कितने ही लोगों को नाम का खजाना बाँट दें।

हरि हरि जन कै ओट सताणी।।
हरि प्रतापि जन अवर न जाणी।।

अब गुरु अर्जुनदेव जी महाराज प्यार से कहते हैं, ''सन्तों और भक्तों को परमात्मा की ओट है, वे परमात्मा के बिना किसी का भी आसरा नहीं रखते।''

ओति पोति जन हरि रसि राते।।
सुंन समाधि नाम रस माते।।

जिस तरह ताने और पेटे में वही सूत है इसी तरह सन्त परमात्मा में ताने और पेटे की तरह रमें हुए होते हैं।

आठ पहर जनु हरि हरि जपै।।
हरि का भगतु प्रगट नहीं छपै।।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''जो आठों पहर नाम जपता है नाम में रत गया है वह प्रकट होता है, किसी के छिपाने से नहीं छिपता।'' हम जानते हैं जब सूरज चढ़ता है तो वह कुल दुनिया को रोशनी देता है लेकिन उल्लु चमगादड़ सूरज की रोशनी को नहीं मानते। सोचकर देखें! इसमें सूरज का क्या कसूर है?

इसी तरह महात्मा 'शब्द-नाम' की कमाई करके दिन-रात शब्द में रते हुए हैं। वे दुनिया में प्रकट होकर 'शब्द-नाम' का होका देते हैं लेकिन ऐसे भी मनमुख होते हैं जो उन्हें देख नहीं सकते, समझ नहीं सकते। महात्मा चतुरदास कहते हैं:

इक दिन सभा उल्लुआँ लाई, बैठे मिल नर नारी जी।
कोई आखे सूरज नाहीं, कौन करे उजयारी जी।
वारो वारी सब बोले, कर कर सोच विचारी जी।
इक ओना विच वड्डा उल्लू, बाणी ओस उचारी जी।

अज तक सूरज हम नहीं डिट्ठा, वड्डी उमर हमारी जी।
जे कोई सूरज सच्चा मन्ने, अकल ओस दी मारी जी।
एक हंस टीसी पे बैठा, बाणी ओस उचारी जी।
है प्रभात देख लो सारे, लक्खां किरण पसारी जी।
चमगीदड़ घुघु आए बैठे, किया न्याय संभारी जी।
उल्लु सब टैं टैं कर हँसे, हंस मौन तब धारी जी।
चतुरदास ऐह अजब अदालत, तीन लोक से न्यारी जी।।

ज्यादा पढ़े-लिखे को बड़ा उल्लू कहा गया है। वह कहता है कि मैंने इतने ग्रन्थ-पोथियां पढ़ी हैं अगर परमात्मा होता तो क्या मुझे दिखाई नहीं देता?

हरि की भगति मुकति बहु करे।।
नानक जन संगि केते तरे।।

आप कहते हैं, ''मालिक के प्यारे हरि की भक्ति करते हैं वे खुद तर जाते हैं और जो उनका पल्ला पकड़कर नाम जपते हैं वे भी मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं।''

पारजातु इहु हरि को नाम।।
कामधेन हरि हरि गुण गाम।।

कहते हैं कि स्वर्गों में एक पारिजात वृक्ष है जिसके नीचे बैठने से सारी इच्छाएं पूरी हो जाती हैं। कामधेनु गाय के बारे में भी बताते हैं कि वह भी सारी इच्छाएं पूरी करती है अगर हम नाम की कमाई करते हैं तो सारे फल नाम की कमाई में आ जाते हैं।

सभ ते ऊतम हरि की कथा।।
नामु सुनत दरद दुख लथा।।

हरि की कथा सब कथाओं और पढ़ाईयों से ऊँची है।

नाम की महिमा संत रिद वसै।।
संत प्रतापि दुरतु सभु नसै।।

नाम की महिमा और बड़ाई के बारे में सन्त ही जानते हैं। सन्तों के प्रताप की वजह से यम हमारे नज़दीक नहीं आता और हम बेखौफ हो जाते हैं।

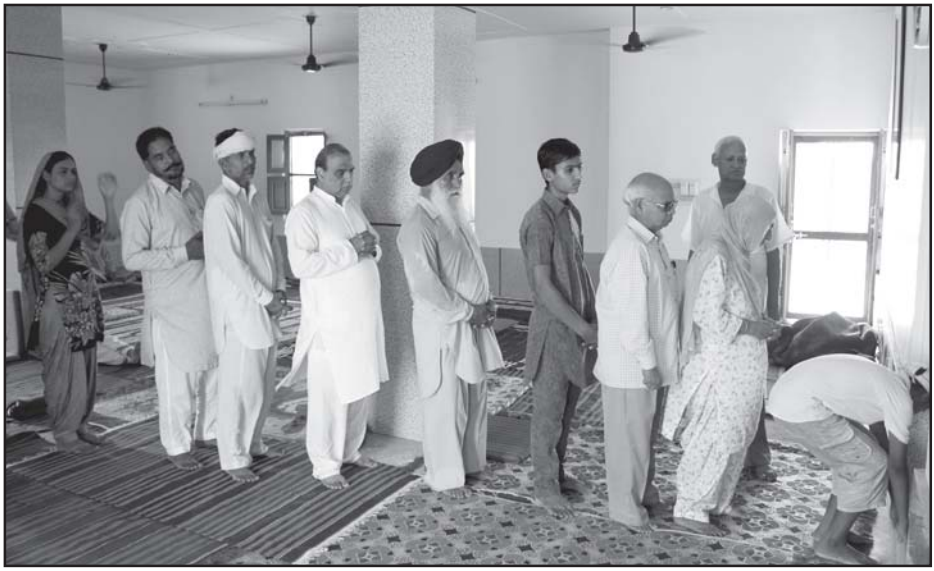

संत का संगु वडभागी पाईऐ।।
संत की सेवा नामु धिआईऐ।।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''सन्तों के पास भाग्यशाली जीव ही जा सकते हैं। जब हम सन्तों की सेवा में लग जाते हैं तो सन्त हमें कहते हैं नाम जपो।'' हम उनकी सोहबत-संगत से यह फायदा उठाते हैं कि हम 'शब्द-नाम' की कमाई में लग जाते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

ईन्द्र की एक घड़ी कुँआ बारह मास।
सतसंग की एक घड़ी सिमरन बरस पचास।।

बारिश का देवता इन्द्र खुश होकर एक घड़ी बारिश कर दे कुँआ बारह साल में भी उतना पानी नहीं निकाल सकता। कमाई वाले महात्मा की संगत में एक घड़ी बैठना घर में बैठकर पचास साल के सिमरन करने से बढ़कर है।

नाम तुलि कछु अवरु न होइ।।
नानक गुरमुखि नामु पावै जनु कोइ।।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज आखिर में फिर कहते हैं, ''नाम के बराबर न जप है न तप है न पूजा-पाठ हैं।'' नाम हमें सन्त-महात्मा से मिलता है। नाम किसी पोथी या मंदिर-मस्जिद से नहीं मिलता। नाम ने सन्तों के अंदर निवास किया होता है, परमात्मा ने सन्तों के अंदर नाम के खजाने रखे होते हैं।

लाहौर में बुल्ले शाह मस्जिद के काजी थे, उनसे पहले उनके पिता वहाँ काजी थे। बुल्ले शाह बहुत पढ़े-लिखे आलम-फाजल थे। वह रोजाना मुसलमानों के सारे कर्म किया करते थे। लाहौर के नज़दीक ईनायत शाह जमींदारी का काम किया करते थे।

बुल्ले शाह का मिलाप ईनायत शाह के एक शिष्य के साथ हुआ। उस शिष्य ने बुल्लेशाह से कहा, ''मियाँ! तू रोज गला फाड़ता है, तू ईनायत शाह के पास जा वह तेरे कान खोलेगा।'' बुल्ले शाह ने ईनायत शाह के पास जाकर कहा, ''महाराज! मैं आपसे कलमा लेने के लिए आया हूँ। रब को प्राप्त करने के लिए आया हूँ, आप मुझे रब को पाने का साधन और तरीका बताएं।''

ईनायत शाह अनपढ़ थे, बुल्ले शाह पढ़ा-लिखा था। ईनायत शाह ने सोचा अगर मैंने इसे पोथियों के हवाले दिए तो कोई

फायदा नहीं क्योंकि यह पहले ही बहुत पोथियां पढ़ चुका है। ईनायत शाह उस समय बूटे लगा रहे थे। आपने कहाः

देख बुल्लया! रब दा की पावणा इधरो पुट्टणा ते ओधर लावणा।

मन को दुनिया की तरफ से हटाकर परमात्मा की तरफ लगाना है। बुल्ले शाह पर नाम का रंग चढ़ गया। मैं आमतौर पर कहा करता हूँ कि प्रेमी रूह का गुरु के पास जाना इस तरह है जिस तरह खुष्क बारूद को आग के पास कर दें।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''परमार्थ प्राप्त करने के लिए एम.ए. पास को पांच साल के बच्चे जैसा बनना पड़ता है।'' बुल्ले शाह ने भी कहा थाः

इलमो बस करीं ओ यार, इक्को अलफ तेरी दरकार।

बुल्ले शाह सैयद जाति के थे। मुसलमान लोग सैयदों को पूजते हैं लेकिन बुल्ले शाह के गुरु ईनायत शाह अराई जाति के थे। अराई जाति को मुसलमान नीची जाति समझते हैं। जब बुल्ले शाह ने अराई जाति के गुरु को धारण किया तो लोगों ने बुल्ले शाह की निन्दा करनी शुरू कर दी कि इसने सैयद होकर एक अराई को गुरु धारण किया है। लोग निन्दा करते रहे लेकिन बुल्ले शाह चुप रहे। बुल्ले शाह ने कहा, ''ठीक है इन्हें निन्दा करने दें।''

निन्दो निन्दो मुझे तो मालिक से मिलने का शौक है।

जब लोग साधु की निन्दा करते हैं तो साधु अंदर से पक्का हो जाता है। लोग साधु की निन्दा करके उसे पाप से हल्का कर देते हैं।

बुल्ले शाह ने गधियां लेकर उन्हें चराना शुरू कर दिया। इससे लोगों में खलबली मच गई कि सैयदों का लड़का गधियां चराता फिर रहा है।

एक पठान किसी गरीब की औरत को उठाकर ले गया था। उस गरीब को किसी ने बताया कि बुल्ले शाह बहुत कमाई वाला फकीर है तुम उसके पास जाओ। वह बुल्ले शाह के पास गया तो बुल्ले शाह ने कहा, ''देखो! कहीं कोई नाच-गाना तो नहीं कर रहे?'' उसने बताया कि उस जगह लोग नाच रहे हैं। बुल्ले शाह वहाँ जाकर उनमें नाचने लगे और नाचते-नाचते आवाज लगाईः

अम्बियां वाली गली सुणीदी, खज्जी वाला बाग।
खोतियां वाला साध बुलौंदा, सुत्ती ऐ ते जाग।
चींणा ईंज छड़ीदा यार.....।।

जब बुल्ले शाह ने तवज्जो दी तो वह औरत खिंची हुई आ गई। बुल्ले शाह ने उस गरीब आदमी से कहा, ''इसे ले जाओ।''

लोगों ने बुल्ले शाह के पिता से कहा, ''देखो! आपका बेटा आपका कितना नाम रोशन कर रहा है पहले तो इसने गधियां ले ली और अब मरासियों में जाकर नाचने भी लगा है।'' बुल्ले शाह के पिता हाथ में माला पकड़े हुए छड़ी के सहारे गिरते-पड़ते बुल्ले शाह की तरफ आ रहे थे। तब किसी ने बुल्ले शाह को बताया कि देखो! आपके पिता आ रहे हैं। बुल्ले शाह ने सोचा! आज बापू भी सूखा न जाए और उसकी तरफ तवज्जो देकर बोलेः

लोकां दे हथ मालियां, बाबे दे हथ माल।
सारी उमर जपेंदिया, खुथ न सका बाल।
चींणा ईंज छड़ीदा यार.....।।

बूढ़ा पिता भी लोक-लाज भूल गया। अब लाहौर के दोनों काजी वहाँ पर नाच रहे हैं। बूढ़ा पिता भी बोलाः

पुत्र जिन्हांदे रंग रंगीले, माँ प्यों लेंदे तार।
चींणा ईंज छड़ीदा यार.....।।

***

धन्य अजायब

दिल्ली में सतसंग का कार्यक्रम

गुरु प्यारी साध संगत जी,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया से हर साल की तरह इस साल भी दिल्ली में 22, 23 व 24 मई 2015 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। सभी प्रेमी भाई-बहनों के चरणों में प्रार्थना है कि सतसंग में पहुँचकर सन्तों के वचनों से लाभ उठाएं।

कम्युनिटी हाल,
भेरा इन्कलेव, पश्चिम विहार (नज़दीक पीरागढ़ी चौक)
नई दिल्ली - 110 087

राकेश शर्मा - 9810212138 सोनू सरदाना - 9810794597 सुरेश चोपड़ा - 9818201999

अहमदाबाद में सतसंग का कार्यक्रम

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया से हर साल की तरह इस साल भी अहमदाबाद में 3, 4 व 5 जुलाई 2015 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। प्रेमी भाई-बहनों के चरणों में विनती है कि सतसंग में पहुँचकर सन्त वचनों से लाभ उठाएं।

ईश्वर भवन,
क्रॉस रोड (नजदीक कॉमर्स कालेज),
नवरंगपुरा,
अहमदाबाद (गुजरात)
फोन - 99 98 94 62 31, 97 25 00 57 94 व 96 38 75 20 20